

दुआ-64**दुआए रोजे सेशम्बा - मंगल****बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम**

सब तारीफ़ अल्लाह के लिये है और वही तारीफ़ का हकदार और वही इसका मुस्तहेक है। ऐसी तारीफ़ जोकसीर व फ़रावां हो और मैं अपने ज़मीर की बुराई से उसके दामन में पनाह मांगता हूँ और बेशक नफ़स बहुत ज़्यादा बुराई पर उभारने वाला है मगर यह के मेरा परवरदिगार रहम करे और मैं अल्लाह ही के ज़रिये इस शैतान के शर व फ़साद से पनाह चाहता हूँ जो मेरे लिये गुनाह पर गुनाह बढ़ाता जा रहा है और मैं हर सरकश, बदकार और ज़ालिम बादशाह और चीरादस्त दुश्मन से उसके दामने हिमायत में पनाह गुज़ीन हूँ।

बारे इलाहा! मुझे अपने लश्कर में करार दे क्योंकि तेरा लश्कर ही गालिब व फ़तेहमन्द है और मुझे अपने गिरोह में करार दे क्योंकि तेरा गिरोह ही हर लेहाज़ से बेहतरी पाने वाला है और मुझे अपने दोस्तों में से करार दे क्योंकि तेरे दोस्तों को न कोई अन्देशा होता है और न वह अफ़सर्दा व ग़मगीन होते हैं। ऐ अल्लाह! मेरे लिये मेरे दीन को आरास्ता कर दे इसलिये के वह मेरे हर मामले में हिफ़ाज़त का ज़रिया है और मेरी आख़ेरत को भी संवार दे क्योंकि वह मेरी मुस्तक़िल मन्ज़िल और दिनी व फ़रोमाया लोगों से (पीछा छुड़ाकर) निकल भागने की जगह है और मेरी ज़िन्दगी को हर नेकी में इज़ाफ़े का बाएस और मेरी मौत को हर रन्ज व तकलीफ़ से राहत व सुकून का ज़रिया करार दे।

ऐ अल्लाह! मोहम्मद (स0) जो नबीयों (अ0) के ख़ातम और पैगम्बरों के सिलसिले के फ़र्दे आख़िर हैं उन पर और उनकी पाक व पाकीज़ा आल (अ0) और बरगुज़ीदा असहाब पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे इस रोज़े सेशम्बा में तीन चीज़ें अता फ़रमा। वह यह के मेरे किसी गुनाह को बाकी न रहने दे मगर यह के उसे बख़्श दे, और न किसी ग़म को मगर यह के उसे बरतरफ़ कर दे और न किसी दुश्मन को मगर यह के उसे दूर कर दे। बिस्मिल्लाह के वास्ते से जो (अल्लाह तआला के) तमाम नामों में से बेहतर नाम (पर मुश्तमिल) है और अल्लाह तआला के नाम के वास्ते से जो ज़मीन व आसमान का परवरदिगार है, मैं तमाम नापसन्दीदा चीज़ों का दफ़िया चाहता हूँ। जिनमें अक्वल दर्जे पर उसकी नाराज़गी है और तमाम पसन्दीदा चीज़ों को समेट लेना चाहता हूँ। जिनमें सबसे मुक़द्दम उसकी रज़ामन्दी है ऐ फ़ज़ल व एहसान के मालिक तू अपनी जानिब से मेरा ख़ातेमा बख़िशश व मग़फ़ेरत पर फ़रमा।